सामाजिक विज्ञान

इतिहास

हमारा भारत-I

कक्षा छठी के लिए इतिहास की पाठ्य पुस्तक

© BSEH Bhiwani
Not to be Reprinted

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
Board of School Education Haryana

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यशामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीं
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम्।। 1 ।।
वन्दे मातरम्।
कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्।। 2 ।।
वन्दे मातरम्।
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि,
तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः
शरीरे बाहते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे मातरम्।। 3 ।।
वन्दे मातरम्।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वाम् नमामि कमलां
अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम्।। 4 ।।
वन्दे मातरम्।
श्यामलां सरलां सुस्मितां
भूषितां धरणीं भरणीं मातरम्।। 5 ।।
वन्दे मातरम्।।
भारत माता की जय।।

© BSEH Bhiwani
Not to be reprinted

सामाजिक विज्ञान

इतिहास

हमारा भारत-I

कक्षा छठी के लिए पाठ्यपुस्तक

© BSEH, Bhiwani
Not to be Reprinted

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
Board of School Education Haryana

इतिहास की पृष्ठभूमि

आज समाज में जो सामाजिक संगठन, राजनैतिक उत्थान, धार्मिक मान्यताएं, आर्थिक क्रियाकलाप, सांस्कृतिक विकास तथा वैज्ञानिक प्रगति दिखाई देती है, इनका मूल, मानव है। यह जानने की इच्छा सदा हमारे मन में रहती है कि ये सभी उपलब्धियाँ मानव ने कैसे प्राप्त की और वह स्वयं इस स्थिति तक कैसे पहुंचा? इन सबका उत्तर इतिहास देता है।

ब्रिटिश प्रकृति वैज्ञानिक 'चार्ल्स डार्विन' ने 1871 ई. में अपनी पुस्तक 'द डिसेंट ऑफ मैन' में पहली बार वर्णन किया कि मानव का विकास बंदरों से हुआ है। यदि मानव प्रजाति का विकास बंदरों से हुआ, तो फिर प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि बंदरों से ही यह विकास क्यों हुआ? बंदरों में ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जिसका विकास हम जैसे बुद्धिमान प्राणी के रूप में हुआ। हालांकि पशु जगत को देखें तो चिम्पैंजी, गोरिल्ला और ओरंगउटान आदि में मानव से काफी समानताएं दिखाई देती हैं, किंतु फिर भी यह बता पाना मुश्किल है कि दोनों का सांझा पूर्वज कैसा दिखाई देता होगा?

1. पुरापाषाण काल

मानव के प्रारंभिक तकनीकी विकास के आरंभिक काल को पाषाण काल कहते हैं। जिसमें मानव केवल पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था। पाषाण काल को पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल तथा नवपाषाण काल में बांटा जा सकता है। भारत में सर्वप्रथम 13 मई 1863 को राबर्ट बुर्सफुत ने तमिलनाडु के पल्लवरम नामक स्थान से पुरापाषाण कालीन उपकरण प्राप्त किए थे। हालांकि भारत में मानव के प्रारंभिक उपकरण 15 से 17 लाख वर्ष पुराने तमिलनाडु के अतिरमपक्कम से प्राप्त हुए हैं। इस काल में मानव छोटे-छोटे समूह में घुमन्तु जीवन में रहते थे और शिकार करके तथा कंद-मूल को इकट्ठा करके जीवन-यापन करते थे। भारत में पुरापाषाण काल को निम्न पुरापाषाण काल, मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरापाषाण काल तीन उपकालों में विभाजित किया जाता है। उत्तर भारत के गांगेय क्षेत्र और केरल को छोड़कर देश के अधिकांश भागों से निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण प्राप्त हुए हैं। मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण केरल, गांगेय क्षेत्र, सिक्किम, असम आदि को छोड़कर भारत के अधिकांश भागों से मिलते हैं। उच्च पुरापाषाण काल के अवशेष मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, गुजरात और राजस्थान में मिलते हैं। इस काल में हड्डी की बनी मातृदेवी की मूर्ति उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले से प्राप्त हुई है। उच्च पुरापाषाण काल में पत्थरों पर चित्रकला के प्रमाण भी मिले हैं। हरियाणा में भी पुरापाषाण काल के उपकरण फरीदाबाद तथा गुरुग्राम जिले की अरावली की पहाड़ियों और पंचकुला जिले में शिवालिक की पहाड़ियों में मिले हैं।

पुरापाषाण काल के उपकरण

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

2. मध्यपाषाण काल

मध्यपाषाण काल का जीवनयापन

इस काल में वातावरण में तापमान की वृद्धि हुई, जिससे पशुओं और वनस्पति में काफी बदलाव आए और मानव के लिए नए क्षेत्रों की ओर बढ़ना सम्भव हुआ। भारत में पुरापाषण काल में मानव का निवास पर्वतीय तथा पठारी भागों तक ही सीमित था, जबकि मध्यपाषाण काल में मानव ने रेतीले क्षेत्र, समुद्रतटीय क्षेत्र, गुफाएं, नदी तथा झीलों के तटों पर निवास करना प्रारम्भ कर दिया था। इस काल में मानव ने छोटे-छोटे समूह में रहकर लघु पाषाण उपकरणों का उपयोग करना शुरू कर दिया था। इसी काल में गोलाकार झोपड़ियों, गर्त चूल्हे और मानव के कंकाल को दफनाने के प्रमाण भी प्रकाश में आए हैं। मध्यपाषाण काल में मिट्टी के बर्तन, सींग और हड्डी के बने आभूषण, पत्थर के सिल एवं लोढे भी प्राप्त हुए हैं। सांभर, चीतल, बारहसिंगा, जंगली सूअर, गैंडा, हाथी, कछुआ, मछली आदि के शिकार के साथ-साथ पशुपालन के प्रमाण भी मिलते हैं। मध्यपाषाण काल में चट्टानों पर चित्रकला में पशुओं को दौड़ते, शिकारियों द्वारा पीछा करते, घात लगाकर शिकार करते हुए दिखाया गया है। हरियाणा में भी मध्यपाषाण काल के उपकरण फरीदाबाद तथा गुरुग्राम जिले की अरावली की पहाड़ियों में मिले हैं।

मध्यपाषाण काल के उपकरण

मध्यपाषाण काल के शिला चित्र

3. नवपाषाण काल

नवपाषाण काल में स्थाई जीवन, कृषि का आरम्भ, पहिए का अविष्कार, अग्नि की खोज और औद्योगिक गतिविधियों के शुरू होने के कारण मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। इस काल में मानव शिकार एवं भोजन इकट्ठा करने की स्थिति से भोजन उत्पादक बन गया था। मानव घर बनाने के लिए झोपड़ियों के साथ-साथ मिट्टी की दीवार तथा मिट्टी की ईंटों का प्रयोग करने लग गया था। इस काल में हाथ से बने बर्तनों के साथ-साथ चाक पर भी बर्तन बनाने लगा था। कुल्हाड़ियाँ, छेनियाँ, बसूले, खुरपा तथा कुदाल आदि इस काल के प्रमुख उपकरण थे।इस काल में कृषि और पशुपालन की मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रचलन था। मुख्य रूप से जौ, गेहूँ, मसूर, मटर, चना और मूंग आदि की खेती की जाती थी। इस काल में भेड़, बकरी, गाय और बैल को पालतू बना लिया गया था। साथ ही सूअर, खरगोश, हिरण, भेड़िया तथा भालू आदि जंगली जानवरों के भी प्रमाण मिले हैं। नवपाषाण काल में मनुष्यों के पूर्ण तथा आंशिक शवाधान के साक्ष्य भी मिलते हैं। अब तक उसकी धार्मिक आस्था का विकास हो गया था।

नवपाषाण काल के उपकरण

इस प्रकार नवपाषाण काल तक मानव ने सामूहिक जीवन, उत्पादन प्रक्रिया, आर्थिक गतिविधियां, तकनीकी प्रगति, कलात्मक रुचि तथा धार्मिक विश्वासों का आधार बना लिया था, जिस पर आधुनिक विकास खड़ा हुआ है।

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprint

विषय सूची

अध्याय 1	सरस्वती-सिंधु सभ्यता	01-11
अध्याय 2	वैदिक काल	12-27
अध्याय 3	रामायण व महाभारत काल	28-42
अध्याय 4	16 महाजनपद	43-51
अध्याय 5	गौतम बुद्ध, महावीर और जगद्गुरु आदि शंकराचार्य का जीवन और शिक्षाएं	52-65
अध्याय 6	मौर्य साम्राज्य	66-82
अध्याय 7	विदेशियों के आक्रमण एवं उनका भारतीय संस्कृति में समावेश	83-94
अध्याय 8	गुप्तकाल : विजय एवं राज्य विस्तार	95-107
अध्याय 9	गुप्तकाल : शासन, समाज एवं संस्कृति	108-120

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)

(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधान के अधीन)

द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण।
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर।
- लोक नियोजन के विषय में।
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य।
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण।
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण।
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा।
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध।
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता।
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता।
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता।
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण।
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

© BSEH, Bhiwani
Not to be Reprinted

1 सरस्वती-सिंधु सभ्यता

आओ जानें

- नदियों का सभ्यता से संबंध
- सरस्वती-सिंधु सभ्यता - नगर योजना, भवन निर्माण, जनजीवन, शिल्प कला एवं व्यापार

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

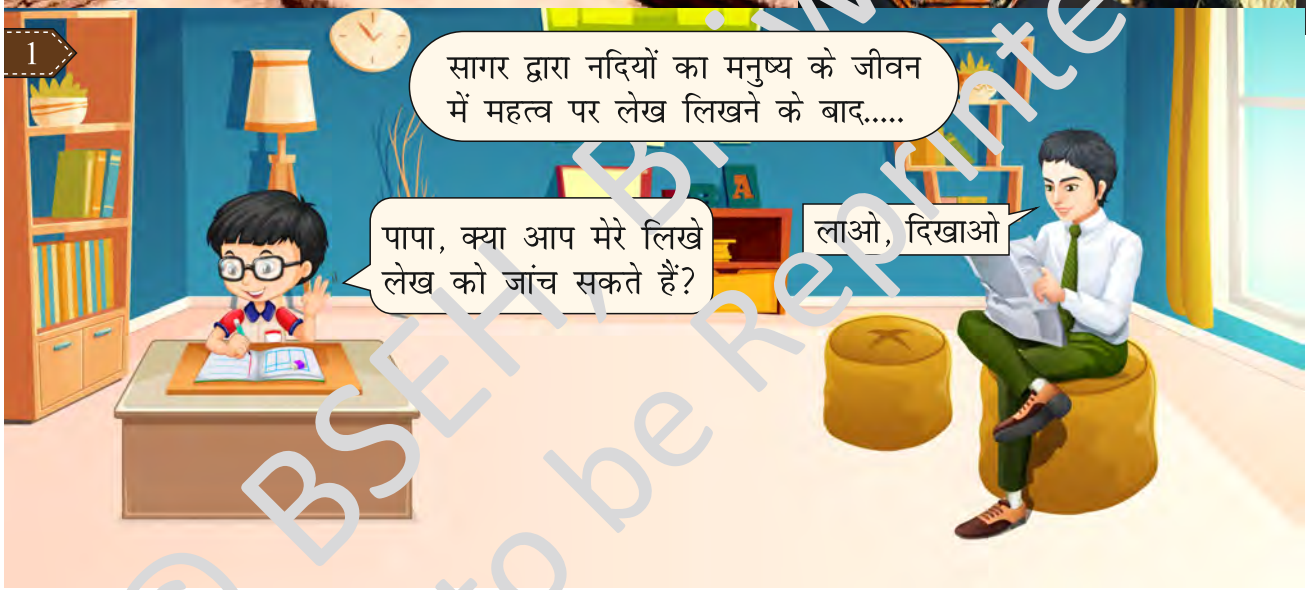

नदियों से मनुष्य को जल की आपूर्ति होती थी। पूरे वर्ष यहां कृषि और मवेशियों के लिए पानी आसानी से उपलब्ध रहता था। विश्व की सभी सभ्यताएं जल स्रोतों विशेषकर नदियों के किनारों पर ही पनपी हैं।

सरस्वती नदी भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक थी, जो आज विलुप्त हो चुकी है। इस नदी की अनेक शाखाएं भी थी। विभिन्न प्रमाणों से इस नदी की उपस्थिति 5000 वर्ष पूर्व तक मानी जाती है। भू-आकृतिक अवशेषों एवं उपग्रहों द्वारा प्राप्त चित्रों से पैलियोचैनल द्वारा सरस्वती नदी का प्रवाह निश्चित होता है। खुदाई में सबसे अधिक सन् 1500 के लगभग पुरातात्विक स्थल इन्हीं नदियों के किनारे मिले हैं। सरस्वती नदी आदिबद्री से निकलकर हरियाणा के यमुनानगर, अंबाला, कुरुक्षेत्र, कैथल, जींद, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा से बहती हुई राजस्थान व गुजरात होती हुई अरब सागर में गिरती थी। दूसरी नदी सिंधु नदी है जो आज भी बहती है। इसका अधिकतर प्रवाह वर्तमान पाकिस्तान में है। मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो व बालाकोट जैसे प्रमुख स्थल इसी नदी के किनारे पर स्थित है।

पैलियोचैनल : नदियों का पूर्वकलिक प्रवाह

सरस्वती-सिंधु एवं इनकी सहायक नदियों के किनारे मिले अनेक नगर अवशेषों (पुरास्थल) के आधार पर ही इस सभ्यता को 'सरस्वती-सिंधु सभ्यता' कहा जाता है।

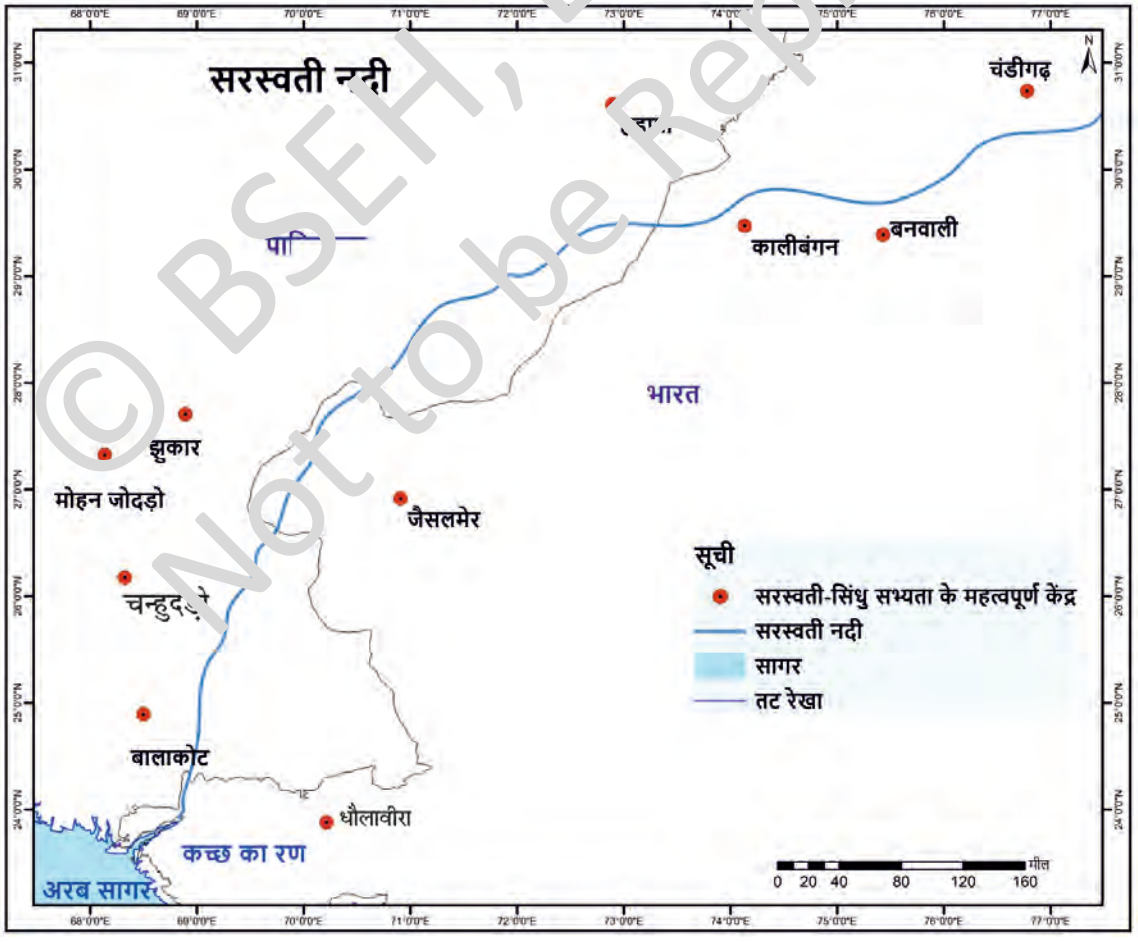

मानचित्र 1.1 - सरस्वती नदी

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

क्या आप जानते हैं?

प्राचीन भौतिक अवशेष अपनी कहानी स्वयं बताते हैं। पहली बार ये अवशेष हड़प्पा में देखे, जब वहां रेल लाईन बिछाने के लिए रोड़े चाहिएं थे। मजदूर वहां नजदीक एक टीले से ईंटों के रोड़े उठा लाए तब पहली बार अंग्रेज अधिकारियों के ध्यान में यह जगह आई। 1921 ई. में दयाराम साहनी के नेतृत्व में जब रावी नदी के किनारे हड़प्पा की खुदाई करवाई गई, तब एक विशाल नगर के अवशेष निकले। 1922 में राखालदास बनर्जी के नेतृत्व में सिंधु नदी के किनारे मोहनजोदड़ो से भी इसी प्रकार के अवशेष प्राप्त हुए।

ज्ञात करें

ऐसे दो धार्मिक पर्वों के नामों की सूची बनाओ जिस पर हम नदी व सरोवर में स्नान करते हैं।

नगर-योजना

चित्र 1.1 चित्र में ऊंचे नगर के अवशेष के साथ ही विशाल स्नानागार (सरोवर)

नगर-योजना : सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नगरों के अवशेष हमें दो भागों में मिले हैं। पश्चिमी भाग छोटा था परंतु ऊँचाई पर बना था। इसे दुर्ग क्षेत्र (नगरदुर्ग) कहा गया है। पूर्वी भाग बड़ा था जिसे निचला नगर कहा गया। अधिकतर पुरास्थलों के दोनों हिस्सों को चार दीवारी से घेरा गया था। जिसे पक्की ईंटों से बनाया गया था। वे इतनी मजबूत दीवारें थी कि आज भी खड़ी हैं। कुछ सार्वजनिक निर्माण कार्य भी मिले हैं। मोहनजोदड़ो में एक बड़ा स्नानागार मिला है। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई थी। इस सरोवर में दो तरफ से उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हैं, चारों ओर कमरे बनाए गए हैं। कुएं से पानी निकालकर इसे भरा जाता था। इसे खाली करने के लिए नाली बनी है। ऐसा लगता है कि धार्मिक पर्व पर इसमें स्नान किया जाता होगा।

सड़कें और नालियां

सड़कें 13 फुट से 33 फुट तक चौड़ी होती थीं व गलियों की चौड़ाई 9 से 12 फुट होती थी। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

चित्र 1.2 एक दूसरे को समकोण पर काटती सड़कें

© BSEH, Bhiwani. Not to be Reprinted

सड़कों के दोनों ओर नालियां बनी थीं। घरों में प्रयुक्त पानी इन नालियों में आकर गिरता था। ये नालियां ईंटों से ढकी होती थी, जिनको हटाकर असानी से नालियां साफ की जा सके। ये नालियां मुख्य नाले में जाकर गिरती थीं, जो नगर से बाहर पानी को ले जाता था। विश्व की एक मात्र सभ्यता है, जिसमें इतनी व्यवस्थित नालियों की व्यवस्था मिली है।

चित्र 1.3 घर की नालियां बड़े नाले में मिलती हुई जो पानी को नगर के बाहर ले जाता था

भवन निर्माण योजना

घरों का निर्माण एक निश्चित योजना से होता था। आमतौर पर घर दो मंजिल के होते थे। घर में आंगन होते थे तथा रसोईघर, स्नानागार व शौचालय की सुविधा होती थी। दरवाजे मुख्य सड़कों की ओर न खुलकर गली में खुलते थे। कई घरों में कुंए भी मिले हैं।

चित्र 1.4 कितना सुंदर ईंट निर्माण कार्य तथा गली की तरफ खुलते दरवाजे-खिड़की

सरस्वती-सिंधु सभ्यता कितनी पुरानी है?

गार्डन चाइल्ड के अनुसार यह सभ्यता 4000 वर्ष पुरानी मानी गई है। जबकि मार्टिमर व्हीलर ने इसका अनुमान 2000 ई.पू. से 1500 ई.पू. के बीच माना है। परंतु नवीन खोजों के अनुसार यह सभ्यता 8000 साल पुरानी है।

जनजीवन

कृषि

नगरों को देखकर लगता है कि ये लोग समृद्ध और खुशहाल थे। लोग नगरों के अतिरिक्त गांवों में भी रहते थे। गांव में रहने वाले लोग कृषि करते थे। खुदाई में मिले अवशेषों से पता चलता है कि ये लोग गेहूं, जौ, दालें, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे। कृषि बैल और ऊंटों की सहायता से हल से की जाती थी। नदियों व तालाबों से सिंचाई करते थे।

चित्र 1.5 खिलौना-हल

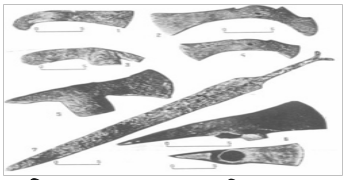

चित्र 1.6 कृषि उपकरण

पशुपालन

लोग ऊंट, बैल, गाय, भैंस, भेड़, बकरी व हाथी आदि पशु पालते थे। बत्तख, खरगोश, हिरण, मुर्गा व तोता आदि पक्षी भी पालते थे। ये सभी जानवर उनके कृषि कार्य, यातायात व भोजन में सहायक थे। पशुओं को वे झुण्डों में चराने के लिए दूर-दूर ले जाते थे।

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

माप तोल

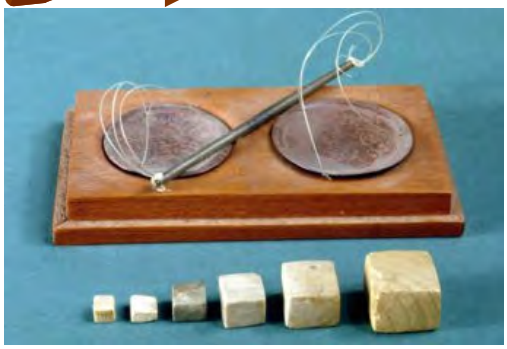

चित्र 1.7 तराजू व तोलने के लिए बाट

चित्र 1.8 धातु के बर्तन

चित्र 1.9 मिट्टी के बर्तन

सुंदर आकार के चर्ट पत्थर के बाट जो अनेक स्थानों से मिले हैं उनका माप एक समान है। इन्हें शायद बहुमूल्य पत्थर और धातुओं को तोलने के लिए बनाया होगा। बड़ी और भारी वस्तुओं को तोलने के बाट भी मिले हैं।

पत्थर, शंख, तांबे, कांसे, सोने और चांदी से बनी अनेक चीजें मिली हैं। धातुओं को गलाना, ढालना व मिश्रण करना वे अच्छी तरह से जानते थे। तांबे और कांसे से औजार, हथियार, गहने और बर्तन बनाए जाते थे। सोने और चांदी से भी गहने और बर्तन बनाते थे। मिट्टी के बहुत ही सुंदर बर्तन बनाने में ये लोग प्रवीण थे।

यहां से सुंदर मनकों के गहनों के अतिरिक्त अनेक बाट और फलक भी मिले हैं।

? क्या आपने पत्थर के बाट देखे हैं?

? आपने कांसे के बर्तनों का उपयोग अपने घर में देखा है?

सामूहिक गतिविधि

शिक्षक कक्षा को तीन से चार विद्यार्थियों के समूहों में विभाजित करें एवं समूहों को अपनी पसंद के अनुसार मिट्टी की सहायता से खिलौने या गहने बनाने के लिए कहें।

हार- शृंगार

बहुत ही सुंदर आकार के सोने, चांदी और पत्थरों के गहने मिले हैं। चित्र में देखिए मनकों को कितना सुंदर तराशा गया है। अनेक मनके कार्नीलियन पत्थरों से बनाए गए हैं जिनमें माला बनाने के लिए छेद किए जाते थे।

चित्र 1.10 तांबे का दर्पण

चित्र 1.11 कंघा

चित्र 1.12 खुदाई मे मिले गहनें

? चित्र में बने गहनों को ध्यान से देखिए और पता कीजिए की ऐसे गहने आज भी पहनते हैं क्या?

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

मोहनजोदड़ो से कपड़ों के टुकड़ों के कुछ अवशेष, चांदी के एक फूलदान के ढक्कन तथा कुछ अन्य तांबे की वस्तुओं से चिपके मिले हैं। पक्की मिट्टी तथा फेयांस से बनी तकलियां सूत कताई का संकेत देती हैं। संभवत: 7000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती होती थी।

व्यापार

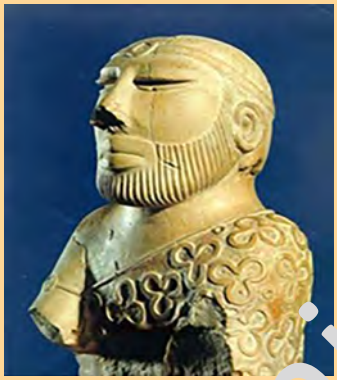

आयात-निर्यात व कच्चे माल की प्राप्ति

कच्चा माल उन पदार्थों को कहते हैं जो या तो प्राकृतिक रूप से मिलते हैं या फिर किसान या पशुपालक उनका उत्पादन करते हैं। जैसे धातुएं प्राकृतिक रूप से मिलती हैं जबकि कपड़ा बनाने के लिए कपास किसान के द्वारा उत्पादित होती है। तांबा, टिन, सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थरों को वे दूर-दूर के क्षेत्रों से मंगवाते थे। तांबा राजस्थान व पश्चिमी देश ओमान से मंगवाते थे। कांसा बनाने के लिए तांबे के साथ मिलाई जाने वाली धातु टिन का आयात आधुनिक ईरान व अफगानिस्तान से किया जाता था। सोने का आयात आधुनिक कर्नाटक और बहुमूल्य पत्थरों का आयात गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था।

चित्र 1.13

चित्र 1.14

इस चित्र में कपड़े का छापा कितना सुंदर है। दाढ़ी व सिर के बाल कितने सुंदर बनाए हैं। माथे पर तिलक है। पुरातत्त्वविद् इसे पुरोहित या राजा मानते हैं।

? चित्र में पगड़ी का पिछला हिस्सा देखिए क्या ऐसी पगड़ी आज भी बांधते हैं जो पीछे की ओर गर्दन से नीचे तक लटकती हो।

फेयांस : खुदाई में फेयांस से बनी मूर्तियां, मनके, चूड़ियां, बाले और छोटे बर्तन मिले हैं। फेयांस को कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता था। बालू या स्फटिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएं बनाई जाती थी। उसके बाद इन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढ़ाई जाती थी। इस चिकनी परत के रंग प्राय: नीले या हल्के हरे होते थे।

चित्र 1.15
मोहनजोदड़ो से प्राप्त बंदर की फेयांस की मूर्ति

चित्र 1.16
चित्र में लोथल बंदरगाह के अवशेष जहां समुद्र से आने वाली नावों से सामान उतारा व चढ़ाया जाता था।

हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे कुछ नगरों में बड़े-बड़े भण्डार-गृह मिले हैं। लोथल व धौलावीरा में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि विदेशों से भी व्यापार होता था।

चित्र 1.17
चित्र में भंडार-गृह, इसमें सामान अलग-अलग बने चबूतरों पर रखा जाता था जो पहले अलग-अलग कक्ष के रूप में थे।

© BSEH, Bhiwani
Not to be Reprinted

गतिविधि

सरस्वती-सिंधु सभ्यता का सबसे विस्तृत स्थान राखीगढ़ी (हिसार) में है। राखीगढ़ी व अन्य स्थानों का भ्रमण करके इस सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

मुहरें : हड़प्पा के लोग सेलखड़ी की मुहरें बनाते थे। ज्यादातर मुहरें आयताकार हैं जिन पर सामान्यत: जानवरों के चित्र मिलते हैं। मुहरों का प्रयोग एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाने वाले सामान से भरे डिब्बों या थैलों को चिह्नित करने के लिए किया जाता होगा। थैलों पर मुहरबन्दी के लिए लाख आदि जैसी वस्तुओं का प्रयोग करके इन मुहरों से छाप लगाते होंगे जिससे यदि कोई सामान के साथ छेड़-छाड़ करे तो छाप टूट जाती होगी।

चित्र 1.18 चित्र में बिना कूबड़ वाले बैल की मुहर

चित्र 1.19 चित्र में एक अपरिचित पशु की मुहर जिसको पुरातत्त्वविदों ने पूजनीय माना है

चित्र 1.20 - 1.24

मनोरंजन के साधन : खुदाई में बच्चों के मिट्टी के खिलौने व बड़ों के द्वारा खेले जाने वाले शतरंज व चौपड़ के पासे मिले हैं। अन्य मनोरंजन के साधनों के अवशेष भी मिले हैं।

चौपड़ के पासे

बच्चों के खिलोने

शतरंज

विभिन्न प्रकार के बच्चों के खिलौने

? क्या आपने यातायात में बैलगाड़ी व ऊँट का प्रयोग देखा है?

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

इतिहास में तिथियां कैसे पढ़ें

अंग्रेजी में बी.सी. जिसे हम हिंदी में ई.पू. कहते हैं। बी.सी. का अर्थ होता है 'बिफोर क्राइस्ट' व ई.पू. का अर्थ होता है 'ईसा पूर्व।'

कभी-कभी हम तिथियों से पहले ए.डी. लिखा पाते हैं और हिंदी में ए.डी. की जगह ई. लिखते हैं। ए.डी. का अर्थ होता है 'एनो डॉमिनी' जो लैटिन शब्दों से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है। इसका सामान्य अर्थ ईसा के बाद के वर्षों के लिए किया जाता है। हिंदी में ई. से अर्थ हुआ 'ईसा के जन्म से' कभी-कभी ए.डी. की जगह सी.ई. तथा बी.सी. की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी.ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का प्रयोग बिफोर क्राइस्ट एरा के लिए होता है।

हम इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में अब 'क्रिस्चियन एरा' का प्रयोग सामान्य हो गया। भारत में तिथियों के इस रूप का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। कभी-कभी अंग्रेजी के बी.पी. अक्षरों का प्रयोग भी होता है जिसका तात्पर्य 'बिफोर प्रेजेन्ट' (वर्तमान से पहले) है।

कुछ अवशेषों का सूक्ष्म निरीक्षण
क्या ऐसा आज भी है? चित्र के सामने 'हां' या 'नहीं' में जवाब दें

सरस्वती-सिंधु सभ्यता में हमें वट वृक्ष की पूजा के अनेकों प्रमाण मिले हैं।

क्या आज भी हम वट वृक्ष की पूजा करते हैं?

खुदाई में संन्यासी के कमण्डल मिले हैं।

क्या आज भी संन्यासी कमण्डल रखते हैं?

खुदाई में हमें तुलसी की पूजा के प्रमाण मिले हैं।

क्या आज भी तुलसी-पूजा की यह परंपरा है?

अनेकों हवन कुण्ड हमें खुदाई में मिले हैं।

क्या हवन (यज्ञ) करने की परंपरा आज भी है?

सात महिला व पुरुषों द्वारा मांगलिक कार्यों में परम्परा निभाने के प्रमाण मिले हैं।

क्या यह सत्त लगियों का रिवाज आज भी है?

शिवलिंग की पूजा के प्रमाण हमें मिले हैं।

क्या आज भी भारत में शिवलिंग की पूजा होती है?

© BSH, Bhiwani Not to be Reprinted

चित्र में एक महिला दो शेरों को अपने दोनों हाथों से पकड़े हुए है। जो दुर्गा के आरंभिक रूप को दिखाता है। क्या आज भी दुर्गा पूजा होती है?

शिव की पूजा के अनेक प्रमाण मिले हैं।

क्या आज भी शिव की पूजा होती है?

खुदाई में देवी की पूजा के अनेक प्रमाण मिले हैं।

क्या देवी की पूजा आज भी करते हैं?

सरस्वती सिंधु सभ्यता के लोग कूबड़ वाले नंदी की पूजा करते थे।

क्या आज भी हम नंदी की पूजा करते हैं?

एक व्यक्ति जो अनेक जानवरों के साथ है तथा सर्प को हाथ में पकड़े हुऐ है। जिसे पशुपति शिव माना है।

क्या सर्प पूजा आज भी है?

मोहनजोदड़ो से खुदाई में कांसे की नर्तकी की मूर्ति मिली है जो अपने पूरे हाथों में आभूषण पहने हुए है।

क्या आपने ऐसे आभूषण धारण करने वाली महिलाएं देखी हैं?

कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

- मेहरगढ़ में कपास की खेती लगभग 7000 साल पहले होती थी।
- नगरों की स्थापना की शुरुआत लगभग 4700 साल पहले आरंभ हो गई थी।
- सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नगरों के अंत की शुरुआत लगभग 3900 साल पहले हो गई थी।
- सरस्वती-सिंधु सभ्यता लगभग 8000 वर्ष पुरानी है।

© RSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. ..... ई. में दयाराम साहनी के नेतृत्व में हड़प्पा की खुदाई करवाई गई।
   क) 1922 ख) 1923 ग) 1921 घ) 1920

2. बी.सी. का अर्थ है .....।
   क) बिफोर क्राइस्ट (ई.पू.) ख) बिफोर कॉमन
   ग) बिटवीन कॉमन घ) इन में से कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से किसकी पूजा सरस्वती-सिंधु सभ्यता में नहीं होती थी?
   क) शिव ख) विष्णु ग) पीपल घ) मातृदेवी

4. बहुमूल्य पत्थरों का आयात गुजरात, ईरान और ..... से किया जाता था।
   क) पाकिस्तान ख) अफगानिस्तान ग) भूटान घ) नेपाल

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. बालू व स्फटिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर ..... तैयार किया जाता है।
2. तांबा व टिन मिलाकर ..... तैयार किया जाता है।
3. खुदाई में सबसे अधिक नगर.....नदी घाटी में मिले हैं।
4. नगरों की बसावट के ..... भाग थे।
5. ..... नगर की खुदाई में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं।

उचित मिलान करो :

1. तांबा	क) गुजरात
2. सोना	ख) अफगानिस्तान
3. टिन	ग) राजस्थान
4. बहुमूल्य पत्थर	घ) कर्नाटक

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाएं :

1. सरस्वती-सिंधु सभ्यता में बैल और ऊंटों की सहायता से हल से कृषि की जाती थी। ( )
2. अनेक मनके कार्नेलियन पत्थरों से बनाए गए थे। ( )

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

3. धौलावीरा में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं जहां से प्रमाणित होता है कि विदेशों से भी व्यापार होता था। ( )
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता का सबसे विस्तृत स्थान राखीगढ़ी गुरुग्राम में है। ( )

लघु प्रश्न :

1. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के अवशेष कहां-कहां से प्राप्त हुए हैं?
2. नदियों का सभ्यता से क्या संबंध है।
3. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नगरों के बारे में लोगों को कैसे पता चला?
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के मनोरंजन के साधन क्या थे?
5. सरस्वती-सिंधु सभ्यता की मुहरों का आकार कैसा था और उनकी आवश्यकता क्यों पड़ती थी?

आइए विचार करें :

1. सरस्वती-सिंधु सभ्यता में उत्पादन के लिए कच्चा माल किन-किन क्षेत्रों से मंगवाते थे?
2. सरस्वती-सिंधु सभ्यता कालीन नगर निर्माण योजना का विश्लेषण कीजिए।
3. किन आधारों पर कहा जा सकता है कि सरस्वती-सिंधु सभ्यता में कपड़े का प्रयोग किया जाता था?
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के निवासियों के महत्वपूर्ण व्यवसाय 'कृषि' और 'पशुपालन' पर टिप्पणी कीजिए।
5. इतिहासकारों के अनुसार सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नष्ट होने के क्या कारण है?

आओ करके देखें

1. उन देवी-देवताओं व धार्मिक क्रियाकलापों की सूची बनाओ जो आज हैं परंतु सरस्वती-सिंधु काल में वे नहीं थे।
2. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के भोजन की सूची बनाओ व आज उनमें आए बदलावों पर चर्चा करो।
3. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के मनोरंजन के साधनों की सूची बनाओ व आज के मनोरंजन के साधनों से वे कितने भिन्न हैं?
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता में ग्रामीण लोगों के जीवन में कृषि एवं पशुपालन का क्या महत्व था?

© BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

जन-गण-मन

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे;
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

भारत माता की जय।

© BSEH, Bhiwani
Not to be Reprinted

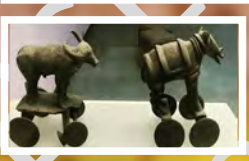

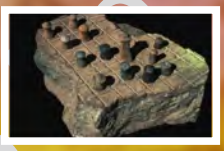

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
Board of School Education Haryana